IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

उद्यमिता आधारित सामाजिक-आर्थिक विकास: रामगढ़ शेखावाटी, राजस्थान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. प्रशांत कुमार

सह आचार्य-व्यावसायिक प्रशासन विभाग

राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू, राजस्थान

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध-पत्र उद्यमिता आधारित सामाजिक-आर्थिक विकास की दृष्टि से राजस्थान के सीकर जिले में स्थित रामगढ़ शेखावाटी नगर के ऐतिहासिक स्वरुप को सम्मिलित करते हुए उद्यमियों के योगदान को उजागर करता है। शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य रामगढ शेखावाटी कस्बे में उद्यमिता परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करते हुए भावी विकास हेतु दिशा एवं व्यूहरचना निश्चित करना है। मुख्यतः शोध-पत्र द्वितीयक समंको पर आधारित है। शोध-पत्र में ऐतिहासिक अभिलेख आधारित अध्ययन कर रामगढ़ शेखावाटी कस्बे में उद्यमिता परिप्रेक्ष्य को विश्लेषणात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। उद्यमिता प्रोत्साहन, विरासत संरक्षण एवं भावी विकास हेतु वित्तीय संसाधन एवं मानव संसाधन प्रशिक्षण आवश्यक है।

मुख्य शब्द: उद्यमिता, उद्योग, मानव संसाधन, वित्त, विरासत , वित्तीय प्रबंधन, प्रशिक्षण।

प्रस्तावना

राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र उद्यमिता प्रोत्साहन गतिविधियों के लिए जाना जाता है। रामगढ़ शेखावाटी राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र के सीकर, झुंझुनूं और थली अंचल के चुरू जिले के संगम पर स्थित एक हेरिटेज नगरी है। यह सीकर संभाग मुख्यालय से 72 किलोमीटर जयपुर-चूरू राजमार्ग पर स्थित है। राजस्थान के सीकर जिले में स्थित रामगढ़ शेखावाटी कस्बे का गौरवशाली अतीत रहा है। यह कस्बा सेठों की सेठाई के कारण ही रामगढ़ शेखावाटी के साथ साथ 'रामगढ़ सेठान' कहलाता है। विक्रम संवत 1888, कार्तिक मास धनतेरस (कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी) को सीकर के राव राजा रामसिंह जी ने रामगढ़ शेखावाटी नगर को स्थापित किया। राजस्थान पर्यटन विभाग के

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

अनुसार सन् 1791 में इस नगर की स्थापना हुई थी। प्रारम्भ में रामगढ़ शेखावाटी का नामकरण सीकर के राव राजा रामसिंह जी के नाम पर रखा गया था।(1) **रामगढ़ शेखावाटी कस्बे की स्थापना से पहले इस भू भाग में एक छोटी ढ़ाणी अवस्थित थी जिसे "नासा की ढाणी" कहा जाता था। सन् 2017 में रामगढ़ शेखावाटी कस्बे की ऐतिहासिक विरासतों, वास्तुकला और सतरंगी संस्कृति के कारण नगर को राजस्थान सरकार द्वारा हेरिटेज नगरी का दर्जा दिया गया है। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि सीकर के राव राजा देवीसिंह जी का वैवाहिक संबंध चूरू के यशस्वी ठाकुर श्री श्योजी सिंह जी की बहन चंदाबाई से हुआ था। राव राजा देवी सिंह जी की पत्नी श्रीमती चंदाबाई की प्रेरणा से रामगढ़ शेखावाटी कस्बे की आधारशिला रखी गई थी। भौगोलिक दृष्टि से सीकर से चूरू जाने वाले मार्ग में यह मध्य का स्थान था। बीकानेर राजघराने से जुड़े चूरू के कुछ गणमान्य महाजनों को सीकर जाते समय आराम करने के दौरान सीकर घराने से रामगढ़ शेखावाटी में बसने की पेशकश की गई थी। इसके बाद चूरू के यशस्वी सेठ श्री देवीप्रसाद जी पोद्दार परिवार के इक्कीस बाशिंदे (बही-खाता) यहाँ व्यावसायिक दृष्टिकोण से आये थे। चुरू के यशस्वी पोद्दार परिवार के सुप्रसिद्ध सेठों की खुशहाली एवं वैभव के कारण ही रामगढ़ शेखावाटी नगर विकसित हुआ और आज संपूर्ण भारत में 'रामगढ़-सेठान' के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है।(2)**

साहित्यावलोकन

डॉ. हर्षवर्धन शर्मा ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान में उद्यमिता प्रोत्साहन ' में उद्यमियों के स्वरूप को समझाते हुए विविधता आधारित नेतृत्व एवं संप्रेषण कौशल विकसित करने पर बल दिया है। प्रोफेसर रमेशचन्द्र अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'शेखावाटी के भित्तिचित्र' में उद्यमियों की बदलती भूमिका पर बल देते हुए मनोबल निर्माण पर बल दिया है। मानवीय संसाधन को प्रशिक्षित करने की दृष्टि से गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण पर बल दिया है। प्रोफेसर पेमाराम ने अपनी पुस्तक शेखावाटी में जाट आंदोलन में ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण पर बल दिया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य रामगढ शेखावाटी कस्बे में ऐतिहासिक दृष्टि से धरोहर संरक्षण, उद्यमिता परिप्रेक्ष्य को सामाजिक और आर्थिक सरोकारों को स्पष्ट करते हुए भावी विकास हेतु दिशा एवं व्यूहरचना निश्चित करना है। इसके अतिरिक्त नगर के उद्योगपतियों के सामाजिक और

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

आर्थिक सरोकारों में योगदान की समीक्षा करते हुए सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वहन एवं आर्थिक विकास में भूमिका का विश्लेषण करना है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र के लिए ऐतिहासिक अध्ययन विधि के आधार पर मुख्यतः द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। उपर्युक्त अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विविध सरकारी प्रकाशन, विभिन्न शोध जर्नल, मासिक पत्रिकाओं, पुस्तकों, सरकारी और गैर सरकारी वेबसाइटस पर उपलब्ध सामग्री का समावेश किया गया है। शोध-पत्र वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक स्वरूप में लिखा गया है।

मुख्य भाग

रामगढ़ शेखावाटी कस्बे के आस पास का क्षेत्र अर्ध शुष्क है। यह कस्बा उत्तर में चूरू जिला मुख्यालय से 17 किलोमीटर, पूर्व में झुन्झुनूं जिला मुख्यालय से 50 किलोमीटर स्थित है। यह नगर रेल एवं सड़क परिवहन से जुड़ा हुआ है। राजस्थान की राजधानी जयपुर से यह लगभग 200 किलोमीटर दूर स्थित है। इसी प्रकार सड़क मार्ग से राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से लगभग 330 किलोमीटर दूर स्थित है।राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 शहर के निकट से ही गुजरता है। तत्कालीन समय में सीकर राजघराने से विशेष अधिकार प्राप्त होने एवं विशिष्ट संबंधों के कारण पोद्दार परिवार प्रारम्भ से ही यहां मुख्य भूमिका में रहा है। रामगढ़ शेखावाटी के पोद्दार परिवार को सीकर के राव राजा जी ने वित्तीय एवं प्रशासनिक अधिकार दिये थे। इसीलिए तात्कालिक समय में राव राजा जी कहते थे "दुहाई महाकि और राज सेठां को"। रामगढ़ शेखावाटी प्रारंभ से ही सेठ-साहूकारों की व्यावसायिक तपोभूमि रहा है। रामगढ़ में उद्यमिता की दृष्टि से गणमान्य व्यक्तियों एवं परिवारों की एक लंबी श्रृंखला रही है जिनमें पोद्दार, रुइया, खेमका, प्रहलादका, जालान, मोदी, सांवलका, चमड़िया, सुरेका, खेतान आदि परिवारों ने सामाजिक और आर्थिक विकास में अपनी मुख्य भूमिका निभाई है।(3) इन परिवारों का रामगढ़ शेखावाटी के सामाजिक-आर्थिक विकास में एक विशेष स्थान रहा है। इन महानुभावों के सामर्थ्य की गूंज और दानशीलता रामगढ़ शेखावाटी सांस्कृतिक नगरी की ऐतिहासिक गाथा बन गयी है।

प्रारंभ में रामगढ़ शेखावाटी में पोद्दार और रुइया परिवारों ने पारिवारिक आवास के लिए विशाल, कलात्मक और भव्य हवेलियों का निर्माण कराया, साथ ही शैक्षिक उन्नयन हेतु विद्यार्थियों के लिए कई संस्कृत विद्यालय, महाविद्यालय एवं छात्रावास भी बनाये, जहां विद्यार्थियों के लिए मुफ्त

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

भोजन, पाठ्य सामग्री उपलब्ध थी। आजीविका एवं अन्य सामाजिक कार्य के लिए बाहर से आने वाले मेहमानों के सुविधाजनक आवास के लिए धर्मशालाओं, अपने पूर्वजों की स्मृति में कलात्मक भित्ति चित्रों से सुसज्जित छतरियों , भव्य भित्ति चित्रों से सुसज्जित मंदिरों की स्थापना और असहाय, अनाथ लोगों के लिए रहने की उचित व्यवस्था का काम रामगढ़ शेखावाटी के इन तत्कालीन उद्यमियों ने दूरदर्शी सोच से किया था। सेठ रामनारायण रुइया, घनश्याम दास रुइया, हरनंदराय रुइया, सुव्रता देवी रुइया के सामान्य शिक्षा और महिला शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक विकास के कारण यह कस्बा छोटी काशी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।(4)

रेगिस्तानी टीलों की धरती पर बसा यह कस्बा कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है। बड़े मुख्य द्वार से भीतर प्रवेश कर बनी ऊंची-ऊंची हवादार हवेलियां, कलात्मक सीढ़ियों से युक्त छतरियां, सेठ अणतराम पोद्दार जोहड़, विभिन्न कुएं, दान, शिक्षा, आयुर्वेद, केजरीवाल चिकित्सालय और संगीत में रुचि, धार्मिक प्रवृत्तियों में योगदान और आने वाले संतों और विद्वानों के लिए सम्मान इस शहर के इतिहास में अविस्मरणीय उदाहरण हैं। वास्तव में इतिहास यहां के सेठों का इतिहास ही है। यहां सेठों की एक पंचायत हुई थी जिसमें पोद्दार, रुइया और खेमका परिवार के सात सदस्य थे। यह पंचायत स्थानीय मामलों से लेकर दीवानी और फौजदारी मामलों, विवादों तक का निपटारा करती थी। रामगढ़ शेखावाटी कस्बा शेखावाटी के सभी बारह नगरों में अग्रणी था। उन्नीसवीं शताब्दी में इस शहर को भारत का चुनिंदा अतिसमृद्ध धन का शहर माना जाता था। रामगढ़ शेखावाटी में भारत के विभिन्न राज्यों के विद्वानों , शिल्पकारों, कारीगरों का बहुत सम्मान था। सभी को योग्यता के अनुसार समय समय पर अलंकृत और पुरस्कृत किया जाता था, तत्कालीन समय में यहां के लोगों के पास स्वायत्तता की कल्पना भी नहीं थी, किन्तु उन दिनों संपूर्ण नगर में रोशनी और साफ-सफाई का प्रबंधन पंचायत द्वारा किया जाता था। नगर नियोजन और सार्वजनिक सुविधा का यह उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है। यह नगर समाज सेवा, अभावग्रस्तों को दान और सहयोग की भावना के क्षेत्र में नामचीन रहा है।(5) **समृद्ध विरासत की दृष्टि से यहां की इमारतों , हवेली, भित्ति चित्रकला अपने आप में अनूठी एवं प्रसिद्ध है। यहां की कलात्मक विशाल हवेलियां, छतरियां और मंदिर इस दृष्टि से पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। नटवर जी का मंदिर , गंगा माई का मंदिर, रघुनाथ जी का मंदिर, रेलगाड़ी वाला लाल कुआं मंदिर उल्लेखनीय है। इन मंदिरों का शिल्प, भितिचित्र विभिन्न ईश्वरीय आख्यान और आकृतियों का माधुर्य, रेखाओं की समृद्धि, रंगों में जादू की यह कला देखने वालों को लोक से अलौकिक दुनिया तक ले जाने का अवसर देती है। इन भित्ति चित्रों को रहस्यमय कल्पनाओं का मूर्त स्वप्न भी कहा**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

जा सकता है। आज भी ये पेंटिंग्स पर्यटकों के लिए आकर्षण, कौतूहल और भूली बिसरी कहानियों का केंद्र बनी हुई हैं।(6)

विवेचन

रामगढ़ शेखावाटी कस्बे को बसाने में श्री केशीदास जी पोद्दार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपने समय के अमीर नगरों में से एक रामगढ़ कस्बा चूरू के संपन्न व्यापारी बंसल गोत्र के अग्रवाल महाजनों की कर्मस्थली रहा है। अग्रवाल महाजनों द्वारा बनायी गई आलीशान हवेलियां, नक्काशी, शिल्पकला उनके सामाजिक स्तर को प्रकट करती थी। पोद्दार परिवार के ही सेठ श्री चतुर्भुज पोद्दार का भी महनीय योगदान रहा है। सेठ श्री तेजपाल पोद्दार परिवार द्वारा निर्मित नया बस स्टेण्ड, इसी के पास स्थित संस्कृत विद्यालय छतरीनूमा भवन में संचालित है। इसी प्रकार रूइया परिवार द्वारा संचालित बिसाऊ सड़क मार्ग स्थित गुफा वाला कुआं भी स्थापत्य कला ही दृष्टि से आकर्षक है। नगर में बिसाऊ दरवाजा के अंदर एवं बाहर कुछ गलियों तक गुफावाला कुआं , जलाशय से पेयजल आपूर्ति सार्वजनिक नल लगाकर की जाती रही है। इसी प्रकार मुख्य डाकघर रामगढ़ शेखावाटी के पास निर्मित गनेड़ीवाल परिवार का बनाया हुआ कुआं भी घरातल से पर्याप्त ऊंचाई पर बना हुआ है जो कि पेयजल आपूर्ति की दृष्टि से प्रसिद्ध रहा है। वैदिक काल की दृष्टि से सोलह महाजनपदों में से एक मत्स्य साम्राज्य के अंतर्गत शेखावाटी को बसाने का श्रेय ढुंढार (जयपुर) से संबंधित राव शेखा को दिया जाता है। राव शेखा की प्रेरणा से समय-समय पर विभिन्न राजपूत शासकों और व्यापारियों द्वारा इस भू-भाग पर किले, हवेलियां, मंदिर, धर्मशालाएं, जोहड / तालाब और मृत्यु उपरांत छतरियों का निर्माण किया गया था। रामगढ़ में छोटे -बड़े 100 से अधिक मंदिर है। प्राचीन शनि मंदिर में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में बेल्जियम से शीशे मंगवाकर दीवारों पर जड़े हुए है। मुख्य बाजार के मध्य स्थित प्रतापेश्वर महादेव मंदिर जन जन की आस्था का बड़ा केन्द्र है। विश्वप्रसिद्ध वेद मंदिर वेदों में से एक सामवेद (संगीत से संबंधित) को समर्पित है। इसे शिखर बंध के नाम से भी जाना जाता है। वेद मंदिर में शास्त्रीय संगीत के वाद्य यंत्र प्रतिकृति विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शित है। रामगढ़ शेखावाटी की गिनती भारत के सबसे समृद्ध नगरों में की जाती थी। मारवाड़ी सेठों / उद्यमियों की रईसी और उदारता लोकप्रिय थी। सैकडो वर्ष पूर्व रामगढ़ शेखावाटी में विद्या के केन्द्रों के रूप में 25 संस्कृत विद्यालयों के अतिरिक्त आयुर्वेद एवं ज्योतिष विद्यालय संचालित थे। जयपुर के अतिरिक्त समूचे राजस्थान में रामगढ़ शेखावाटी के सेठों द्वारा बनाया गया

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

महाविद्यालय संचालित था इसलिए यह कस्बा दूसरी काशी या छोटी काशी के नाम से भी जाना जाता था।(7)

पोद्दार परिवार द्वारा बनवाई गई छतरियां भी शिल्पकला की दृष्टि से बहुत उन्नत है। छतरियों की दीवारों पर की गई फ्रेस्को पेन्टिंग लगभग 200 वर्षों पूर्व की होने के बाद भी नयनाभिराम एवं चमक बनाए हुए है। रोचक जानकारी यह भी है कि पोद्दार परिवार ने अपने परिवार के पुजारियों / पुरोहितों की छतरियां भी अपनी छतरियों के पास ही बनवाई थी। यह इस बात का सूचक है कि वे उन्हें अपने परिवार के समान ही महत्व देते थे। छतरीयों में ही सेठ रामगोपाल पोदार की छतरी भी अत्यन्त आकर्षक है। इसकी भीतरी दीवारों पर राम एवं श्री कृष्ण के जीवन प्रसंगों और संगीत आधारित भित्तिचित्र बनाये गये है। इसके अतिरिक्त सेठ रामेश्वरलाल छतरी, खेमका परिवार की छतरियां और कानोड़िया परिवार की छतरी भी दर्शनीय है। भित्तिचित्र बनाने के लिए मेहंदी, गेरुआं, हल्दी, काजल और फूलों की पत्तियां पीसकर रंग तैयार किया जाता था। अंग्रेजों के भारत आगमन के बाद में इंडिगो अर्थात नीला रंग इस फ्रेस्को पेंटिंग में और सम्मिलित किया जाने लगा था। पेंटिंग के लिए 'आला-गीला' पद्धति काम में ली जाती थी जिसमें पहले चूने की एक परत दीवार पर लगाई जाती थी और उसके बाद उस पर चित्र बनाए जाते थे। शीशे जड़ने के लिए पतला सूती और पतला रेशम का कपड़ा भी दीवार पर चिपकाया जाता था।हवेलियों के इस शहर**रामगढ़ शेखावाटी में लगभग 100 हवेलियां हैं। यहां की हवेलियां भी सैकड़ों वर्ष पूर्व बनवाई गई है। सदियों पहले बनी होने के बाद भी इन हवेलियों की स्थापत्य कला एवं वास्तुशिल्प मनमोहक है। हवेलियों में मुख्य द्वार के लिए साधारणतः विशाल लकड़ी की नक्काशी से निर्मित दरवाजा, उसके बाद हवेली के अन्दर का अलग प्रवेश द्वार और भीतरी छोटे छोटे दरवाजे और खिडकियां गौरवशाली इतिहास को दर्शाती है। कस्बे की मुख्य हवेलियों में सांवलका हवेली, रुइया हवेली, लडिया हवेली , सिंघानिया हवेली, भीमसरिया हवेली, खेमका हवेली, सर्राफ हवेली, जौहरी परिवार से जुड़ी हवेलियां दर्शनीय है। समृद्ध सेठ जयनारायण पोद्दार की हवेली में कलात्मक पत्थरों, लकड़ी का बेहतरीन प्रदर्शन किया गया है। सेठ श्री दीपचंद किशनलाल पोद्दार की हवेली के बाहरी भाग में भी भित्तिचित्र आकर्षित करते हैं ।(8)**

उदारमना रामगढ़ के सेठ साहुकारों ने जनकल्याण हेतु धर्मशालाएं भी बनवाई जिनमें सुरेका, गोरिसरिया, रुइया, सिंघानिया परिवार का मुख्य योगदान रहा है। शेखावाटी पानी की कमी वाला इलाका रहा है लेकिन श्री कृष्ण गौशाला के सामने अतीत की समृद्धि की दृष्टी से सेठ अणतराम पोद्दार परिवार का जोहड़ समृद्ध विरासत को दर्शाता है। कला के पारखियों ने जिस धैर्य, अभ्यास

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

और उदारता से ये कार्य करवाए, आज वही भावना उनके वंशजों से अपेक्षित है। उचित रख-रखाव एवं संरक्षण के अभाव में भित्ति-चित्रण की यह प्राचीन विरासत अब नष्ट होती जा रही है। (9)

निष्कर्ष

स्वाधीनता के पश्चात 1960 ई. तक यह रामगढ़ शेखावाटी नगर उन्नति की और अग्रसर रहा। इसके बाद के कालखंड में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य बदल गया और यहां गिरावट शुरू हो गई। जिन हवेलियों में सुबह से शाम तक दर्जनों नौकर-चाकरों और मुनीमों की भीड़, बैठकी होती थी, वहां अब सन्नाटा पसरा हुआ है। नगर के गढ़ परिसर में बड़े-बड़े राज्य अधिकारी आते रहते थे। पंडितों के समूह सुबह-शाम वेदपाठ और शिवालयों में महिमन् पाठ करते थे। केशर, कस्तूरी और विविध प्रकार के इत्र की सुगंध नगर की गलियों में महकती रहती थी। बहुत सी हवेलियों में आज भी सुगबुगाहट सुनाई देती है, किन्तु ऐसी हवेलियों की संख्या ज्यादा है जिनमें वर्षों से कोई पवित्र दीपक भी नहीं जला है। इसके अतिरिक्त रामगढ़ कस्बे में धार्मिक उत्सवों का प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जिनमें मकर संक्रांति, महा शिवरात्रि, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, गणगौर आदि त्योहारों पर यहां विशेष आयोजन होते रहे हैं। सेठ-साहूकार इन त्योहारों पर लोगों को दान देकर पुण्य कमाते थे। वर्तमान में रामगढ़ के गौरव का यह सच्चा इतिहास यहां से लुप्त होता जा रहा है। आज भी देशी-विदेशी पर्यटक और कला के पारखी इन्हें देखने आते हैं और इन भित्ति चित्रों की कला का बारीकी से अध्ययन करते हैं। इन चित्रों की विशेषताओं के कारण यह शहर एक प्रमुख पर्यटन केंद्र बन सकता है। अत: इन हेरिटेज इमारतों, भित्तिचित्रों को ऐतिहासिक धरोहर मानकर इन्हें सुरक्षा प्रदान करना युग की मांग है। इसके अतिरिक्त युवा वर्ग को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कौशल विकास, स्थानीय आवश्यकता और कच्चे माल की उपलब्धता के आधार पर औधोगिक इकाईयों को स्थापित किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ:

1.राजस्थान में उद्यमिता -डॉ. के.सी.शर्मा, नीलकमल प्रकाशन, उदयपुर
2. राजस्थान में औद्योगिक विकास, डा॰. मुकुल ग्वालानी, हिमांशु प्रकाशन, उदयपुर
3. भारत में व्यवसाय विकास, डॉ. शरद सिंह, जेटीएस प्रकाशन, नई दिल्ली
4.बिजनेस एथिक्स, डॉ. विशाल कुमार, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा
5. वेलोसिटी ऑफ राजस्थानी इंटरप्राइजेज, डॉ. विपिन शेखर, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पंजाब

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, February 2024

6.इंडिया टुडे के विभिन्न संस्करण

7.टाइम्स ऑफ इंडिया के विभिन्न संस्करण

8.दैनिक नवज्योति के विभिन्न संस्करण

9. www.patrika.com

9. www.uniraj.ac.in

10. www.mlsu.ac.in

11. www.hindustantimes.org

12. www.hte.rajasthan.gov.in

13. www.rtdc.rajasthan.gov.in

14. www.shekhawatitoday.com